

जल्लूल जल्लूस बनाकर लाल बोजाए भे मिरफतारी देना।  
कुलमीला कर 105 स्त्रियां पकड़ी गईं।

- \* डॉक्टर यासमुप्ता घायलों की देगभाल भी कर रहे थे और
- \* फोटो भी उत्तरवा रहे थे।
- \* फोटो उत्तरवाने का कारण - संसार को यह बताना कि अंग्रेज भारतियों पर किस प्रकार अत्याचार कर रहे हैं।
- \* लगभग 200 लोग घायल हुए।
- \*

### [मौखिक सूचना उत्तर]

कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था।  
कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 दिन इसलिए महत्वपूर्ण था।  
क्योंकि आज के ही दिन को सारे इदुस्तान में स्वतंत्रता की विवरणों के सप्त में मनाया जा रहा था। इसी दिन कलकत्ता वासियों को अपने आप को देश-भक्त सिद्ध करने का मौका मिल रहा था।

1. सुभाष नाबू के जूलूस का भार किस पर था?
2. सुभाष नाबू के जूलूस का भार पूर्णदास पर था जिन्होंने इस जूलूस का पूरा संबंध करवाया। उन्होंने जगद-जगद कोटों खींचने का भी संबंध किया था और बाद में पुलिस द्वारा उन्हें पकड़ लिया गया था।

3. विद्यार्थी यंग के मस अविनाश नाबू के झाँड़ा बांडने पर क्या प्रतिक्रिया हुई? पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। उनके साथ आरो लोगों को मारा पीटा और बदौ से हटा दिया।

4. लोग अपने-अपने मकानों व न सार्वजनिक स्थानों पर राष्ट्रीय झाँड़ा किस बात का संकेत देना चाहते थे?
5. लोग इस बात का संकेत देना चाहते थे कि वे भी अपने देश की अजादी और राष्ट्रीय झंडे का पूरा सम्मान करते हैं।

6. पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?

पुलिस कमिशनर यह नहीं चाहते थे कि सभा में भाग लेने वाले नेता और जनता एक-जुट होकर झंडा फहराएँ और आजादी की प्रतिज्ञा पढ़ें। इसीलिए पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों वहाँ यानों के द्वेर लिया था।

## (प्रिलिखित प्र०/३०)

1. १६.०१.१९३१ के दिन को अमर बनाने के लिय क्या-क्या तैयार साँ की गई? १६ जनवरी १९३१ का दिन कलकत्ता वासियों के लिए महत्वपूर्ण था। इसे अमर बनाने के लिए कलकत्ता वासियों ने एक मुठ दोकर काफी तैयारियाँ की। शहर के दूर भाग पर राष्ट्रीय झंडा लगाया। छड़े बाजार के सभी मकानों पर राष्ट्रीय झंडा लगाया फहराया गया था। कई मकान तो रस से सजाए गए थे जैसे आजादी भिल गई हो। दूर भाग पर उत्साह और नवीनता दिखाई देती थी।

2. 'आज जो बात थी वह निराली थी'- किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है?

२. १६ जनवरी का दिन अपने-आप में निराला था। कलकत्ता वासी पूरे उत्साह के साथ इस दिन के यादगार दिन बनाने की तैयारी में जुटे जुटे थे। अमेरी सरकार के कड़े सुरक्षा प्रबंधों के बाद ही दृजारों की संख्या में लोग लाडी खाकर भी जुलूस में भाग ले रहे थे। सरकार द्वारा सभा भंग करने की कोशिशों के बावजूद भी बड़ी संख्या में आम जनता और नेता लेग भी मोनुमेंट के पास इकट्ठे हो रहे थे। स्थिरों ने भी इस आदोलन के बढ़चढ़ कर भाग लिया। इस दिन अमेरी काबूल जैसे खुली चुनाती देकर कलकत्ता वासियों ने देश स्त्रेम और रक्त का परिचय दिया।

३. पुलिस कमिशनर और कॉर्सिल के नोटिस में क्या अंतर था?

३. पुलिस कमिशनर द्वारा निकाले गए नोटिस में यह लिखा था कि अनुकूल धारा के अनुसार कोई सभा नहीं दी सकती। सभी कार्यकारियों को नोटिस दे दिया गया था कि आप सभा में भाग लेंगे तो दोषी घमझो जारँगो। उधर कॉसिल की तरफ से यह दो नोटिस निकाला गया कि मोनुमेंट के नीचे छीक चार बजकर चौंबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा आजादी की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी को बड़ा पहुँचना चाहिए।

4. शर्मिला के मोड पर आकर जुलूस क्यों दृट गराया?

5. सुभाष बाबू के नेतृत्व में जुलूस पूरे जोश के साथ आगे बढ़ रहा था। यों आगे बढ़ने पर पुलिस ने सुभाष बाबू को पकड़ लिया और गाड़ी में बैठकर छिपकर लालबाजार की जेल में भेज दिया। जुलूस में भाग में बैठकर छिपकर लालबाजार की जेल में भेज दिया। जुलूस में भाग में बैठकर छिपकर लालबाजार की जेल में भेज दिया। जुलूस में भाग में बैठकर छिपकर लालबाजार की जेल में भेज दिया। जुलूस में भाग में बैठकर छिपकर लालबाजार की जेल में भेज दिया। जुलूस में भाग में बैठकर छिपकर लालबाजार की जेल में भेज दिया। जुलूस में भाग में बैठकर छिपकर लालबाजार की जेल में भेज दिया।

6. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

7. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की महत्वपूर्ण भूमिका थी। गुजराती सेविका संघ की ओर से जुलूस निकाला गया था। मारवाड़ी बालकों विद्यालय से झंडा फूराया गया जिसमें जानी जानकीदेवी और मदालसा जैसी ने भाग लिया। पुलिस द्वारा किया गया प्रबंध और लाठी चाँची की परवाह छिपा दी जगह - जगह से स्त्रियों मोनुमेंट के पास पहुँची। सरकारी कानून को तोड़कर 105 स्त्रियों ने अपनी छिपफतारी दी। पुरुषों के साथ मिलकर औरतें भी पुरुषों के साथ मिलकर औरतें भी पुलिस के जुलूस का शिकार हुईं।

8. जब से कानून भाग का काम शुरू हुआ है जब से आज तक इतनी बड़ी सभी रेसे मेंदात में नहीं गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि आपने लड़ाई थी। यहाँ पर कौन से आंसू किसके द्वारा लालबू किया गया कानून को भंग करने की बात की गई है। क्या कानून भर करना चाहिए था?

→ कलकत्ता में २६ जनवरी १९३१ को पुलिस कमिशनर नोटिस निकाला गया कि अमुक धारा के अनुसार वहाँ कोई सभा नहीं हो सकती। सभी ने भाग लेने वाले व्यक्ति को टोपी समझा जारीगा। उनके इस कानून को भर करते हुए कौसिल की तरफ से २१ उन्हें खुली चुनावी दी गई की उन्हें मोनुमेंट के निचे लोग रक्काज दौकान हांडा फूरारंग, अंग्रेजी के सरकार आजायी का विरोध करने के लिए जी भी निशम बनानी थी। उसे भंग करना अनुचित नहीं कहा जा सकता क्योंकि हमारे विचार

मेरे देश की रक्षा और कर्जा आजादी के लिए कोरिश करना तथा राष्ट्रीय झंडा फटाना का अधिकार हर देश वासी को दोना चाहिए।

7. बहुत से लोग वायल दूर, बहुतों को लोकअप मे रखा गया, बहुत सी स्त्रियाँ जेल गई, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपको चिचार मेरे यह सब अपूर्व क्यों हैं?
- १६ जनवरी, १९३१ का दिन अद्यमव था क्योंकि उस दिन कलकत्ता वासियों ने अपनी देशी भक्ति, रक्ता और साहस को स्पृह करने को अवसर मिला था। उन्होंने देश का दूसरा स्वतंत्रता दिवस पूरे जोश उत्साह के साथ मानते दूर उन पर, विशेष रूप से औरतों पर अनेक आपाचार लिये पर बहुत उनके इरादे को बदल नहीं सके और त ही उनका जोश कम हो गया। एक चुट दौकर राष्ट्रीय झंडा फटाने और स्वतंत्रता की प्रकल्प स्तित्ता करने का जो संकल्प उन सब के मिलकर लिया था उसे उन्होंने अत्याचार यह कर भी उस दिन पूरा किया।

८. लोग अपने-अपने स्थानों गलानों पर राष्ट्रीय झंडा फटाकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?
९. वह यह संकेत दे रहे थे कि वह अपने देश की आजादी और राष्ट्रीय झंडे का पूरा सम्मान करते हैं।

## आशय संपष्ट कीजिए]

- खुला चेलेज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी?
- इस का आशय यह है कि जब १६ जनवरी १९३१ के दिन कलकत्ता मे जगद-जगद पर झंडा फटाने के उत्सव मनारा गया तो अंग्रेज सरकार को यह बात अच्छी नहीं लगी। इसलिए उन्होंने भारतीयों पर अनेक जुलम किए। कलकत्ता के इतिहास मे यह पहली बार हुआ था कि पुलिस कमिशनर द्वारा इह खुली चुनौती दी गई हो ना केवल ऐकजुट दौकर झंडा फेराया जाएगा पुलिस द्वारा यह नोटिस भी जारी किया गया कि इन समाजों मे भाग लेने वालों को दोषी माना जाएगा। आजादी के इतिहास मे इसी खुली चुनौतियों के देखकर पहले कभी कोई ऐसी सभा नहीं हुई है।

(2) 7/22

खुला चैलेज टेकर ऐसी सभा पढ़ले नहीं की गई थी?

A

2. पुलिस ने कोई प्रदर्शन न हो इसके लिए कानून निकाला की
2. कोई जुलूस आये आयोजित नहीं होगा परंतु सुभाष बाबू की अस्थिकरण में कोई नोटिस निकाला था कि मोनुमेंट के नीचे झांडा फहराया जारेगा और व्हितंत्रा की प्रविष्टि पढ़ी जारेगी। सभी को इसके लिए ओमनित किया गया खूब सचार भी हुआ। सारे कलकत्ता में झांडा फहराया गया था। सरकार और आम जनता में खुली लड़ाई थी।

R  
6/6/2022

(9) 7/22

# [मनुष्यता]

(प्रश्न/उत्तर)

1. कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?
1. कवि के अनुसार यह संसार नशवर है। जिस ने जन्म लिया है उसने यह संसार धोड़ कर जाना छोड़ है। इस संसार में उस मनुष्य की मृत्यु को सुमृत्यु कहा जाता है जिसे मरने वें के बाद लोग याद रखते हैं और उसके लिये आस्था बढ़ते हैं। जो दुसरे लोगों की यादों में बसा रहे और उनके लिये प्रेरणा देने वाला हो रहे व्यक्ति की मृत्यु को सुमृत्यु कहते हैं।

2. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?
2. उदार व्यक्ति हमेशा दुसरों का भला करता है। उसके मन में अपनेहर का भाव होता है। वह सारे विश्व को राक समझता है। निष्वार्थ भाव से सेवा करता है। उसके मन में ऊँच-नीच, जात-धर्म से संबंधित कोई भ्रेद-भाव नहीं होता। दुसरों की सदाचारा के लिये रह योग और बलिदान के लिये हमेशा तैयार रहता है।

3. कवि ने दृश्यीजि, कर्ण आदि महान् व्यक्तिओं का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिये क्या संदेश दिया है?
3. कवि ने दृश्यीजि जी, कर्ण आदि महान् व्यक्तिओं के उदाहरण देकर मनुष्यता को योग और बलिदान का संदेश दिया है। अपने लिये तो सभी जीते हैं, जो मनुष्यता के लिये जीता है और मरता है वही धन्य है। जैसे दृश्यीजि ने देवताओं की रक्षा के लिये अपनी अस्थियाँ परदाशन करदी। करण ने अपने जीवन रक्षक कवच कुँड़ल को शरीर से अलग कर देकर दान कर दिया। रातिदेव राजा ने धूम के व्याकुल श्राद्धमण को अपने दिसे का भेजत दे दिया। राजा शिवि ने कम्बुतर के रक्षा के लिये अपने शरीर का भाँस काट कर दे दिया। यह कांडानियाँ हमें परोपकार संकेश कर देती हैं। कवि कहना चाहते हैं कि। इस नरक शरीर के लिये भोह नहीं करना चाहिए। हमेशालोगों की भलाई के लिये योग और बलिदान करने के लिये योग करना चाहिए।

प्र कवि ने इन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व - रहिए  
 जीकि व्यतीत करना चाहिए।  
 → कवि ने इन पंक्तियों में व्यतीत किया है :-  
 रहो न भूल के कभी, मदाघ तुच्छ बिल्त में।  
 सनय जान आपको, करो न गर्व निल्त में।

प्र 'मनुष्य मात्र बँधु है' से आप उसके समझते हैं? स्पष्ट कीजिए?  
 → 'मनुष्य मात्र बँधु है' का अर्थ है कि हम सभ सभ मनुष्य एक  
 इश्वर की संतान हैं, हम सब भाई - भाई हैं, भाई - भाई होने के नाते छा  
 भाइयों के साथ रहना चाहिए और एक दूसरे का बड़े समय में सश  
 देना चाहिए।

प्र कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों की है?  
 → कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा की है क्योंकि सभी मनुष्य  
 एक दुसरे के भाई - बँधु हैं। यह नहुत बड़ी समझ है सबके पिता इश्वर  
 हैं। कवि कहते हैं कि अगर हम अपने भाई की नददतदी करेंगे तो उस  
 जीवन व्यर्थ हो जाएगा कहलाने के कामिलनदी हैं।

प्र व्यक्ति को किस स्फरण का निकन व्यतीत करना चाहिए?  
 → व्यक्ति को दुसरों के मदद के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए। और  
 अपना फायदान सोच कर दुसरों की मदद करनी चाहिए और उन के  
 लिए मर मिट्ठने के लिए भी लैंगर हो जाना चाहिए।

(०१  
स्पॉकेज)

विचार लो

लिख भरे।

१. भाव सौन्दर्य

→ कवि कहता है मनुष्य को ज्ञान दोना चाहिए की वह मरणशील है इसलिए उसे मृत्यु से डरना नहीं चाहिए परन्तु, उसे ऐसी मुमृत्यु को प्राप्त दोना चाहिए जिससे सभी लोग मृत्यु के बाद भी ज़राद करें। कवि के अनुसार ये से व्यक्तिका जीना या मरना व्यर्थ है। जो खुद के लिए जीता है।

उसी

लिख भरे।

२. भाव सौन्दर्य

→ कवि के अनुसार उदार व्यक्तियों की उदारशीलता को पुस्तकों, इतिहासों में स्थान पकड़ उनका जखान किया जाता है। उनका समर्पण लोगों आमार मानते हैं तथा पुजते हैं। जो व्यक्ति विश्व में रुक्ता और संखड़ता को फैलता है उसकी कीर्ति का थारे शंसार में मुणगान होता है।

३. क्षुदर्त रंतिदेव

लिख भरे।

भाव सौन्दर्य

→ इन पंक्तियों में कवि ने पौराणिक कथाओं का उदाहरण किया है। मूर्ख से व्यक्ति व्याकुल रंतिदेव ने माँगते पर अपने आजन का शाल भी दो दिया तथा देवताओं को ज्ञान के लिए दधीर्ण ने अपनी दृढ़ियों को ब्रह्म बनाने के लिए दिया। राजा उशीर ने कबूतर की जान ज्ञान के लिए अपने रारीर का मांस बट्टेलिए को दे दिया।

सदानुभूति चाहिए

लिख भरे।

४. भाव सौन्दर्य

→ कवि ने सदानुभूति उपकार और करुणा की भावना को मासे बड़ी पूजी बताया है। कहा है कि इससे ईश्वर भी वश माँ हो जाते हैं, जूँक ने करुणावश पुरानी परमपराओं को तोड़ा जो कि दुनिया की अलाई के था इश्शीलिए लोग आज भी उन्हें पुजते हैं।

लिख मरे।

५ रहोन भूल

→ भाव संकेत

कवि कहते हैं कि अगर किसी मनुष्य के पास यह, श्वर-दौलत है तो उसे इस लात के गुर्व में ऊँचा दूसरे को आपेक्षा नहीं कही चाहिए क्योंकि इस संसार में कोई ऊँचाई नहीं है सब के सर पर ईश्वर का दृश्य है।

अंत अंतरिक्ष→ भाव संकेत

कवि के अनुसार अबत आकाश में असंख्य घैवता औंजड़ है जो अपने दृश्य छाकर परोपकारी और दयलू मनुष्यों के इवागत के लिए खड़े हैं। इसलिए हमें परस्पर सहयोग करकर उन ऊँचाईयों के प्राप्त करता चाहिए जहाँ घैवता स्वयं हमें अपने गोद में बिड़ता।

८ चलो अभीष्ट

→ भाव संकेत

आत्म पंक्तियों में कवि मनुष्य को कहता है कि अपने बृहिद्धन गान पर हृसते-खेलते चलो व और रास्ते पर जो नाथ पड़ उन्हीं हृताते हुए आगे नढ़ों। परन्तु इसमें मनुष्य को व्यट्टेयह द्यात रखना चाहिए कि उनका आपसी सामनस्य न व्यटे और ब्रोदशार्व व बढ़े। जल हम रङ्क दूसरे के दुखों को दूर करे हुए आगे बढ़े तभी हम सच्चे मनुष्य बहु कहलाएँगे।

लिख मरे।

— X — X —

5/1/23

## समास

**परिभाषा**

आपस में संबंध रखने वाले दो याँ दो से अधीक शब्दों को जिलाकर जब एक नया सार्थक शब्द बनाया जाता है उसे समास कहते हैं।

**समास के भेदः-**

**अव्ययी**

1. तत्पुरुष
2. कर्मस्थार्थी
3. द्युषिण
4. कुवा द्वंद्व
5. बहुवर्णी
6. अव्ययी

\* **तत्पुरुष**

**गोशाला**

1. गो का के फिर शाला

**धनदीन**

2. धन से हीर हीन

**कर्मस्थार्थी**

\* जिस का पहला पद उपभाव और दुसरा पद उपभेद होता है।  
 जिससे तुलना जिसकी तुलना

**अव्ययी** - पहला पद प्रथान, उपसर्व, चुक्ष शब्द।

आज्ञन

जन्मन्मर

यथासमय

समय के अनुसार

- ० नमतलव
- ० मतलन के फिला
- ० प्रतिक्षिण
- ० भू दृष्टिकर
- ० ब्रह्मास
- ० लाभ के फिला

यज्ञशाला - यज्ञ का शाला

आप बीती - अपने पर बीती

रघुकुमार - राजा का कुमार

ऐसाईधर - ऐसई के लिए धर

भ्रष्टभीत - भ्रष्ट से व भीत

सिरदर्दि - सिर में दर्दि

दृथकड़ी - दृष्टि के लिए कड़ी

मनपड़द - मन को पसंद

(तित्पुरष )

(कर्म श्याम)

15.7.23

15.7.23

## पाठ-1 [संचयन]

[ठिक्की दूर काका]

यत्रणाओ - कटों

१. आसवित - लगावा

२. सयाना - नडा होना

३. रमझाय्यार - भवसागर के मध्य में

४. वितीन - जुँलुप्त होना

५. विकल्प - दूसरा उपरा

६. ठाकुरबारी - देवरक्षान

७. संचालन - चलाना

८. नियुक्ति - लगाया गया

९. दवनी - गैद्दू

१०. अगउभ - प्रयोग में लाने से पहले देवता के लिरुनिकाला गया अंशा।

११. पविष्ठ - गदरा

१२. प्रवद्धन - भाषण

१३. मशागूल - व्यस्त

१४. तल्क्षण - उसी पल

१५. अकारथ - बैकार

१६. मुस्तेंद - तैयार

१७. त्रिष्कर्ष - परिणाम

१८. नये - वसीयत

१९. अप्रत्याशित - आकर्षिमक

२०

15.7.22

## पाठ - । [ संचयन ]

### दूरिदृश्य काका

प्रश्न / उत्तर

कथावाचक और दूरिदृश्य काका के बिच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

→ दोनों एक ही गाँव में रहते हैं, कथा वाचक दूरिदृश्य काका का बद्दुत सामाजिक रहता था औ दोनों के बीच गहरा संबंध था। कथावाचक के दूरिदृश्य काका के प्रतीलगाव के कारण हुये।

- दूने के कारण वह सुख-दुख नाँटते थे।
- दूरिदृश्य काका कथावाचक को बचपन में बद्दुत प्यार करते थे। वह उस कथे पर उठाकर पुनाया करते थे। वही प्यार बड़ा होने पर दोस्ती में बदल गया।

2. दूरिदृश्य काका को महत्व और अपने भाई एक ही ओरी के क्यों लगाने लगे।

→ दूरिदृश्य काका की अपनी कोई आँलादू नहीं थी। उनके पास 15 बींगे जमीन थी। दूरिदृश्य काका के भाइयों ने पटले तो उनकी खुब केगभाल की पर धीर-धीर उनकी पतनीयों ने काका से बुरा व्यवहार करना शुरू कर दिया महत्व को जब पता चला तो वह बहला फुसलाकर काका को अकुराखी ठाकुरबारी ले आए। वहाँ उनकी खुब सेवा की और साथ ही 15 बींगे जमीन ठाकुरबारी के नाम निर्लिखवाने की बात की। काका ने जब रैसा करने से मनह किया तो महत्व ने जबददसती माट-पिटकर ऊँझुठे के निशान ले लिए इस बात पर दोनों पक्षों में लड़ाई हुई। दोनों ही दूरिदृश्य काका को दुख देरहे थे। दोनों का लक्ष्य उनकी जमीन दैश्याना था। इसके लिए दोनों ने ही काका से धोखा भी किया बल का सरोग भी किया इसलिए दूरिदृश्य काका को महत्व और अपने भाई एक ही ओरी के लगाने लगे।

3. ठाकुरबारी के स्तरि गाँव वालों के मन में अपार भ्रूदा के जो भाव हैं

उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है? ठाकुरवा दी गाँव का एक पुराना धार्मिक स्थान है) कहा जाता है कि इस स्थान पर एक संत आकर झोपड़ी बनाकर रहने लगे थे। वह सुबह शाम पुजा पाठ करते थे। गाँव में बालों ने यदा जम्हर करके ठाकुर जी का एक घोटा सा मंदिर बनवा दिया। आकाशी बढ़ने के साथ साथ ठाकुर वारी का भी विकास होता गया। लोगों का मानना था कि उनका हर काम ठाकुरजी की कृपा से होता है। पुत्र के जन्म पर, मुकदमे की जीत पर, लड़की की शारदी पर वे तय होने पर, लड़के को नामकरण मिलने पर वह अपनी खुशी से ठाकुरजी को लपता, गदने और अनाज छाटते थे। बहुत खुशी मिलने पर जमीन का घोटा सा दुकहा थी ठाकुरबारी के नाम लिख देते थे। इससे पता चलता है कि गाँव बालों में ठाकुरबारी के प्रती अपार अद्वा थी उनमें अंश विश्वास भी था और वह -धार्मिक प्रवृत्ति के भी थे।

### प्रवृत्ति

अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बदतर समझ रखते हैं? कहा के आश्चार पर स्पष्ट करो। अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बदतर समझ रखते हैं। वह जानते हैं कि जब तक उनकी जमीन - जारीदात उन तक पास हैं सब उनकी उनका आदर करते हैं। ठाकुरबारी के मद्दत उन को इसलिए समझ है क्योंकि वह उनकी जमीन ठाकुरबारी के नाम करवाना चाहते हैं। उनके भाई उनकी जमीन के कारण दी उनका आदर करते हैं। हरिहर काका ऐसे कई लोगों को जानते हैं जिन्होंने अपने जीते - जी अपनी जमीन - जारीदात किसी और के नाम लिख दी। बाद में उनका जीव जिवन नएक बन गया था। वह नहीं चाहते थे कि उनके साथ भी ऐसा ही हो।

हरिहर काका को जबरन उठाने जाने वाले कौन थे? उन्होंने उनके साथ कैसा बताव किया?

हरिहर काका को जबरन उठाने वाले ठाकुरबारी के मद्दत के लोग वह लोग भाला, गौड़ासा और दंदों से लैस होकर आस्थी रात के समय हरिहर काका के घर आए और उन्हें जनरहस्त पिठ पर लाघ कर चंपद दो गर्म मद्दत और उनके साथियों ने हरिहर काका के साथ तुरा व्यवादर किया। उन्होंने हरिहर काका के हाथ - कर गाँध कर मुँह में कपड़ा ढुका

जबर दस्ती जमीन के कागजों पर ऊँचुठे के निशान लगवारा। उसके नाम उन्हें आनान के गोदाम में बंद कर दिया।

- 6 दूरहर काका के मामलों में गाँव वालों की बया राग थी और उसके बया कारण शे  
→ गाँववालों के दो बर्ग बन गए थे। दोनों के ही अपनी अपनी राग थे। आधे  
लोग परिवार वालों के पक्ष में थे उनको कहना शाकि काका की जमीन  
पर तो परिवार वालों का ही इस बनता है। इसीलिए उन्हें उनमीन जाल्द  
अपने भाईयों के नाम लिख देनी चाहिए। ऐसा तो हूँ करना अनियारा हो गा।  
दुसरे पक्ष के लोगों का भानगा शाकि काका को अपनी जमीन छाकुर बारी के  
नाम लिख देनी चाहिए। इस से उनका नाम और जड़ा फैले गा और मरने के बाद  
उसके उन्हें स्वर्ग मिले गा। इन सब का कारण यह था कि दूरहर काका की न  
कंपती थी और न कोई सनतात उनकी जनीषा नमीन ही हन सब के लालय का  
कारण था।

- 7 कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह बयों कहा, "अहान  
की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से छूटते हैं। जान दोनों के बाद तो आदमी  
आवश्यकता पड़ते पर सृत्यु को अवश्य करने के लिए तैयार हो जाता है।"  
→ लेखक ने इस इसीलिए कहा कहा क्योंकि दूरहर काका दोनों ही दोलातों  
से गुजरे हैं। पहले जब हूँ वह अज्ञान की स्थिति में थे तो मृत्यु से छूटते थे।  
परंतु बाद में ज्ञान दोनों पर उन्हें उन्हें मृत्यु का कोई दृष्टि नहीं रहा। ज्ञान  
दोनों पर काका को वह सब लोगा शाद आते हैं जिन्होंने जीते-जी अपनी  
जमीन-जारदात दुसरों के नाम लिख दी थी बाद में उन्हें दर-दर की ठोकरे  
खानी पड़ी थी। वह सोचते हैं यही हालत से तो लोग उन्हें रुक ही बाहर में मार दे।  
महंत काका का अपहरण कर लेते हैं, छराते-छमकते और मारते हैं। उनके भाई  
भी ऐसा ही करते हैं पर दूरहर काका पर उनकी धमकियों का कोई असर  
नहीं दौता। उन्हें लगता है मृत्यु तो रुक फिर आनी ही है इसीलिए मृत्यु से हरना  
वर्यर्थ है।

- 8 समाज में इस्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार स्रकाट कीजिए  
→ आज समाज में मानवीय मूल्य स्थिर-स्थिर समाप्त होते जा रहे हैं। अधिक  
तर लोग अपने सावार्थ के लिए स्वस्त्र इस्तों निभाते हैं। अब रीशतों के

स्वार्थी को महल्ला दिया जाने लगा है। इसी रीति से इसे अपने परार में अंतर करने की सूची बनाते हैं। इसमें सुख-दुःख में काम आते हैं। यह दुःख की बात है कि आज के इस बदलते समय में इसको पर योगी की भावना दूबी होती जा रही है। इसमें प्यार और आईचारा समाज हो गया है। इस कदानी में भी पुलिस यहीं न पहुँचती तो परिवार बल काका की दृत्या कर देते। यहाँ पर इसको का युत तब संपूर्ण नहीं आता है जब नदिया और परिवार बालों को काका की दृत्या न कर पाएँ। काका अफसोस होता है। हीकड़े प्रकार आज भी इसमें व्यत-दोलत का अधिक अद्भुत दी जाती है।

9. यदि आपके पास हरिहर काका जैसी दालत में कोई होता तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे?

यदि हमारे पर के आस-पास कोई हरिहर काका जैसी दशा में होगा तो हम उस तरह से उसकी सहायता करेंगे। पहले तो उसके परिवार बालों का समझाएँ गे कि उनके साथ ऐसा व्यवहार न करें। उन्हें यार और आदर दें। उनके फिर भी न गाने तो कुछ बड़े बम्बुजुरगों को लेकर रुक कर्मठी बनाएँ गे और छल निकालने की कोशीश करेंगे। यदौ पुलिस जी मदद भी लेनी पड़ी तो पिछे नहीं छूटेंगे। हम कोशीश करेंगे कि मीडिया भी संयोग करे और उस व्यक्ति को सही दंसाफ दिलाएँ।

10. हरिहर काका के गाँव में योगी की पहुँच होती तो उनकी क्या स्थिति होती अपने शब्दों में लिखिए।

हरिहर काका का धर्म और युत के रिशतों से विश्वास उठ चुका था। उसके बढ़ गानसिंह सप्त संविग्रह दोगरा थे। वह बिलकुल चुप रहते थे। किसी की भी अवृत्ति नहीं देते थे। आज देखा जारूर तो मीडिया की विरोध भूमिका है। लोगों का सचाई से अकरवाना उसका मुख्य काम है। इस के द्वारा पर-पर में बात पहुँचाई जासकती है। यदि हरिहर काका की बात मीडिया तक पहुँच जाती तो शायत दालात अभी दूर ही अपनी बात और अपने पर दूर अत्याचारों की जानकारी लोगों तक अच्छी तरह पहुँच पाते। हरिहर काका को मीडिया हीक मार से नयाएँ दिलवाती। आजादी से जीते उन की सहायता करती। जिस प्रकार के तनाव में वह जी रहे थे तो से दालात मीडिया की मद्दायत ग्रीलने के बाद बहीं होते।

27/7/22

# तंतारा-वामीरो

प्रश्न | उल्लंघन

प्र१ तंतारा-वामीरो कहाँ की कथा है?

उ१ यह उन हृषीकेश की कथा है जो आज बिटिल अंदमान और कारनीकोवार के नाम से जाने जाते हैं।

प्र२ वामीरो अपना गाना क्यों भूल गई?

उ२ वामीरो स्थान मग्न हो कर गाना गा रही थी कि आचानक समुद्र की रक्खा ऊँची लहर ने भीगो दिया था। एक दम से उसका स्थान दृष्ट गया और उसने गाना बंद कर दिया।

प्र३ तंतारा ने वामीरो से ठथा चाचना की?

उ३ तंतारा ने वामीरो से चाचना की, कि वह अपना मदमड़ मदधुर गाना पुरा कर बाद वे उसका नाम जानने और डागले पिन भी बहाँ आने की प्रार्थना की।

प्र४ तंतारा और वामीरो के गाँव की कथा शीतिशी?

उ४ एक गाँव के लोग दुसरे गाँव के लोगों के साथ विवह नहीं कर सकते थे। अपने ही गाँव में लड़के लड़कों की शादी होती रही।

प्र५ कोष्ठ में तंतारा ने क्या किया?

उ५ कोष्ठ में तंतारा ने अपनी लकड़ी की तलवार को धरती में छोक्स पोंप दिया वह उस तलवार को पुरी तक्षत के साथ अपनी ओर झीड़ खिचने लगा। दृष्टि के उत्तम छिनारे तक तलवार को खिचते में हु दृष्टिपूर्ण भागों में जट गया।

प्र६ तंतारा की तलवार के बारे में लोगों का वर्णन मत देखें।

उ६ तंतारा इतने सहासी काम करने के पिछे लोग रहे तलवार की शक्ति मानते थे। लोगों के अनुसार तंतारा की तलवार में कोई दृष्टिशक्ति शौकिस के लल पर वह इतनी छद्मदुरी के काम कर सकता था।

प्र वामीरा ने तंतारा को छेंखी से क्या जावाब दिया?

उ वामीरा ने तंतारा को छेंखी से जवाब दिया कि वह उसके कहने पर गाना बरो गारा वह पढ़ले उसे तंतारा कि वह कोन है। वह उस से गलत प्रश्न बरो करे है। वह उसे प्युर बरो रहा है वह आपने गाँव के पुरष के इलागा किसी अन्य के उत्तर देने के लिए मजबूर नहीं है।

प्र तंतारा - वामीरा की व्यागमयी मृत्यु से निकोबार क्या परिवर्तित आया?

उ तंतारा - वामीरा की व्यागमयी मृत्यु व्यर्थ न गई। निकोबारी इस पटना के बाद दुसरे गाँव में भी आपने लड़के - लड़कियों का विवाह करने लगे। उनकी मृत्यु का यदी सुखद पर परीनाम था।

प्र निकोबार के लोग तंतारा को क्यों पसंद करते हैं?

उ निकोबार के लोग तंतारा को उसके पश्चपकारी और सदाचारी सवभाव के कारण पसंद करते हैं। वह सदा दुसरे की सदाचारी करने में विश्वास रखता था। सारे दुरीप वासीयों की संका करना वह अपना क्रतव्य समझता था।

प्र निकोबार दुरीपमधूर के विषय दोनों के बारे में निकोबारियों का क्या विश्वास है?

उ निकोबार दुरीपसमृद्ध के विषय दोनों के बारे में निकोबारियों का विश्वास है कि कभी लिटल अन्डेमान और कार निकोबार आपस में मिले हुए ये इन के विषय दोनों के पिछे तंतारा और वामीरा की लोक कथा है। दोनों उलग उलग गाँव के थे। आपस में प्रेम करते थे। लोकोन गाँव वालों के दीर दीरी - रीवाजों कारण योनों का प्रेम असफल रहा। तंतारा - वामीरा के असफल प्रेमकी दुरीपानी इस दुरीप को दो भागों में नाट दिया।

प्र तंतारा युग परिष्रम करने के बाद कहाँ गया रह रहा के प्राकृतिक सौंदर्य का क्या विश्वास है? वर्णित आपने शब्दों में कीजिए।

उ तंतारा युग परिष्रम के बाद समुंद्र के किनारे ढूँढ़ने गया था। शोम का समय था। उस समय सुर्ज सुर्ज दुखने वाला था। ठंडी - ठंडी हवाएँ चल रही थी। पक्षियों के चिट - चिटने से वातावरण गुँगा रहा था। सूर्ज की आतिथि किरनों चानी में घुल कर सुंदर बड़ा रही थी। लद्दारों की आवाज सपष्ट सुनाई दे रही थी। वाता वस वर्ण शांत था।

प्र वामीरो से मिलने के बाद तांतरा के जीवन में क्या परिवर्तन आया?

उ वामीरो से मिलने के बाद तांतरा के मान में हर समय वामीरो की तसवीर पुमती रहती और जुबान पर केवल वामीरो का नाम रहता वामीरो के बिना उसे समय काटना कठिन हो गया। उसे एक-एक पल पदाड़ से भी भासी लगते लगा। हर शोज शाम दोने से पहले ही लपाती की उस समुद्र चंद्रात फर जा देका था। और वहाँ वामीरो के आने का इतजार किया करता था। अब उसे लगते लगा था कि वामीरो के बिना उसका जिक्र जीवन कुट्ट भी नहीं है।

प्र माचीन काल में भनोरजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे?

उ प्राचीन काल में भनोरजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए कई कार्य किए किए जाते थे। पशु, फसल, वर्ष, कुशती, देगल और गेलों का आयोजन ये किया जाता था। पशु व वर्ष में शक्तिशाली पशुओं का प्रदर्शन होता था। युवतों की शवती पञ्च परिष्कार के लिए उड़े पशुओं से लड़ाया जाता था। इस में सभी लोग हृदसा लेते थे। पासा गाँव में पर्ष ने एक रैंसा मेला होता था। जिसमें सभी गाँव के लोग इकट्ठे होते थे। उस में नाच गाने और भोजन का भी पर्याप्त होता था।

### ~~शक्ति शाल~~

प्र स्टॉटियों जब बंधन बन बोझ बनने लगे तब उनका दृट जाता ही अच्छा था? वर्णे।

उ स्टॉटियों द्वारा प्रकार का बंधन होता है। ऊट का अर्थ है रैंसा बंधन जिसमें समाज का मूला होने की जगह बुरा हो जाता। जो रिवाज लोगों के बीचकारे और हृदयों पुरी करने के माध्यम से बने वह ऊट है। रैंसी स्टॉटियों का दुर जाना डाढ़ा है। इसमें बदलाव आता है। इसका मुख्य कारण यह है कि समय लगातार बदलता है और रोसे समय में यह लोग घोश घोश पिछे रखते हैं। इसे बंधन में जकड़ कर छारे बिकास का बंद करते हैं। इससे इनसात की आजादी बगापत हो जाती है। लोसक के अनुसार समाज के लिए इन घोषणा के स्टॉटियों का दुर जाना ही चैटर है।

प्र जब कोई राट न सूझी तो कोष्ठ का शमन करने के लिए उसमें शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचते लगा।

उ तांतरा से बिना वारा दाना अपगान सदात गया। उब वगारो की गाँ जौर

उसके गाँव वालों ने उसका बहुत अपमान किया तो उस अपमान से वर्षों का उसे कोई उपरान्ह न सुझा। उसने अपने गुस्से को शात करने के लिए अपनी लकड़ी की लिंगार गे शक्ति भरी किरण अपनी उस अद्भुत लिंगार की पुरी शक्ति से घरती बैंधोप किया। मानो वह उस घरती पर अपना गुस्सा निकाल रहा हो जिस पर उसे अब अपना अपमान सहना पड़ा। उसने उस लिंगार को पुरी ताकत के साथ खेचना शुरू किया। इस से घरती हो छुड़ी न बंट गई।

**प्र** बस आस की रुक किरन थी जो समुद्र ली देह पर दूबती किरणों की तरह कभी भी दूब सकती थी।

अ तंतारा वागीरो को पहली ही नाजर में प्यार करने लगा था। तब उसने इंतज़ार गे आपने जिवन की सारी आस लगार बैठा था। उस ने वागीरो को किरण से शाम को समुद्र बहुत पर आने के लिए कहा था। वह प्यारु होकर उसका इंतज़ार कर रहा था। उस के बह भी स्कूल के अंदर आये थे। उसने उसका नाम लिया था। उसका नाम कौन था? उसने शाये ही रुक के आशा की किरण भी थी। उसे लगता था कि, आशा की यह किरण वागीरो के न आने पर समुद्र ने इनके सुर्ज की किरणों की तरह कहा कि, कुछ न जार। तंतारा इसी अस्पृष्ट भुवनों के द्वारा दृढ़ा था। उसे आशा निराशा के, भी बीच इन्होंने दृढ़ आपनो व्रेंग के सफल होने की क्षमता नहीं रहा था।

30/2/22

# [मुट्ठावैर]

अलख जाना - किसी अच्छे काम को करने के लिए प्रेरित करना

1. ढड़ा पड़ना - शांत होना

2. रंग दिखाना - आसलियत दिखाना

3. [दायरी का रक्क पन्ना ]

उपना - अपना मोरचा मोर्चा संग्राहना - स्थिति संभालना

4. आँखे भर आना - दुःखी होना

5. आसमान से जमीन पर गिरना - उच्चर स्थिती से निम्न स्थिति पर आना

6. खुल कर बाते करना - बिना संकोच के बाते कहनी

7. खुल - झौलना - कोर्चित होना

8. चूपत हो जाना - घाग जाना

9. चिकनी - चुपड़ी बाते करना - दूसरे को अच्छी लगते भरवाली बाते करना।

10. जी जान से खुट जाना - खूब प्रशास करना

11. जितने मुहुर्डतनी बाते होना - कई बड़े तरहों की बाते होना।

12. टोड़ से रहना - जानकारी लेने के लिए सभास में रहना

13. तितर - बितर होना - बिखर जाना

14. तृती बोलना - प्रभ्राव होना

15. दूँ-दूँ, मैं-मैं होना - झागड़ा होना

16. छिल पसीजना - दया करना

17. दृष्टि की भक्ष मक्खी होना - नेकार होना

18. नमक - मिर्च लगाना - बढ़ - चढ़ाकर कहना

19. पाँव स्थल पछारना - बहुत आदर देना

20. पाँव पसारना - कैलाना

21. दफ्टरी आँखें लगना - लिलकुल पसंद न होना।

22. तदन में आग लगना - ईश्रुता होना।

23. बाते बताना - बदने बताना

24. भतकतकन लगना - पता न लगना

25. मङ्जास्थर में फँसना - परेशानी में फँसना

26. मोह भंग होना - सर्चाई का पता लगने पर मन बदलना

[दरिद्र काका]

28. मुँद न खुलना - कुद न लताना
29. सहन शक्ती जवाब देना - हिमत खतम हो जाना
30. सिन आँखों पर लिठाना - असाधिक सम्मान देना
31. कान छड़े होना - सातकी होना
32. मैज उडाना - मजे से सुविधा - सम्पन्न जीवन लिताना
33. रंग चढ़ना - ऊसर होना
34. गिर हुए दृष्टि - लालची निंदा नज़रें
- 35.

28/2/2022

आप सार्थक रा. बी. सी विद्यालय के खेल प्रबंधक हो आप अपने विद्यालय में दुसरे विद्यालय को ए साथ हाँकी भैंच करवाने जा रहे हो इस के लिए एक सुचना लिखिरें।

रा. बी. सी विद्यालय  
सुचना  
हाँकी भैंच का आयोजन

दिनांक - २. ८. २२

मैं रा. बी. सी विद्यालय का खेल प्रबंधक होते के बाते आप विद्यार्थिशों को सूचित करता हूँ कि दिनांक ६. ८. २०२२ को विद्यालय के मैदान में अन्य स्कूलों के साथ हाँकी भैंच का आयोजन हो रहा है। इसका समय सुबह १० बजे सुबह १० बजे मैदान में आ जाएँगे।

खेल प्रबंधक

सार्थक